तिथि

चन्द्रमा के भोगांश [longitude of moon] से सूर्य का भोगांश [longitude of sun] घटाने पर प्राप्त अंशो को 12° से भाग करने पर जो भागफल प्राप्त होता है उसे तिथि कहते हैं। जब चन्द्रमा और सूर्य एक ही राशि और एक ही अंश पर हों अर्थात् दोनो के अंशों का अन्तर शून्य हो तो अमावस्या तिथि होती है। यदि दोनो का अंतर 180° हो तो पूर्णिमा तिथि होती है। कुल तिथियां 30 होती हैं। 15 तिथियां शुक्ल पक्ष की और 15 तिथियां कृष्ण पक्ष की होती हैं।

	शुक्लपक्ष	कृष्णपक्ष
अशुभ तिथियां	1,2,3,4,5	11,12,13,14,30
मध्यम (न शुभ न अशुभ) तिथियां	6,7,8,9,10	6,7,8,9,10
शुभ तिथियां	11,12,13,14,15	1,2,3,4,5

शुद्ध तिथिः- वे तिथियां जो एक ही सूर्योदय को छू पाती हैं, शुद्ध तिथि कहलाती हैं।

क्षय तिथिः- वे तिथियां जो एक भी सूर्योदय को नही छू पाती हैं, क्षय तिथि कहलाती हैं।

वृद्धि तिथिः- वे तिथियां जो दो सूर्योदय को छू पाती हैं, वृद्धि तिथि कहलाती हैं।

दोनों पक्षों की तिथियां, उनके स्वामी और उनका नैसर्गिक स्वभाव आदि निम्न प्रकार से हैं:-

क्रम	दोनो पक्षों की	तिथियों के	तिथियों के	त्याज्य कार्य

संख्या	तिथियां	स्वामी	नैसर्गिक स्वभाव	
1	प्रतिपदा (1)	अग्नि	वृद्धिप्रद	काष्टसंचय
2	द्वितीया (2)	ब्रह्मा	मंगलप्रद	उबटन प्रयोग
3	तृतीया (3)	पार्वती (गौरी)	बलाप्रद	
4	चतुर्थी (4)	गणेश	खलप्रद	
5	पंचमी (5)	नाग (सर्प)	लक्ष्मीप्रद	
6	षष्ठी (6)	स्कन्द (स्वामी कार्तिकेय)	यशप्रद	काष्टसंचय, तेल प्रयोग
7	सप्तमी (7)	सूर्य	मित्रप्रद	आंवला स्नान
8	अष्टमी (8)	शिव	द्वन्दप्रद	मांस भक्षण
9	नवमी (9)	दुर्गा	उग्रप्रद	आंवला स्नान
10	दशमी (10)	यमराज	सौम्यप्रद	उबटन प्रयोग
11	एकादशी (11)	विश्वेदेवा	आनन्दप्रद	उपनयन संस्कार
12	द्वादशी (12)	विष्णु (हरि)	यशप्रद	
13	त्रयोदशी (13)	कामदेव	जयप्रद	उबटन प्रयोग
14	चतुर्दशी (14)	शिव	उग्रप्रद	क्षौरकर्म (बाल कटवाना)
15	पूर्णिमा (15)	चन्द्रमा	सौम्यप्रद	
30	अमावस्या (30)	पितर	मित्रप्रद	काष्टसंचय, आंवला स्नान, मैथुन

नोटः-

परिहारः- षष्ठी शनैश्चरे तैलं, महाष्टम्यां पलानिच।

तीर्थक्षौरं चतुर्दशयां, दीपमाल्यां च मैथुनम्।।

अर्थात्ः- षष्ठी तिथि शनिवार के दिन हो तो तेल का प्रयोग, दुर्गामहाष्टमी के दिन मांस भक्षण, चतुर्दशी के दिन तीर्थ में क्षौर कर्म (बाल कटवाना) और दीपावली की रात्रि मैथुन निषेध नही है।

कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा शुभ और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा अशुभ होती है।

रविवार के दिन यदि नवमी (दोनो पक्षों की) तिथि हो तो भी काष्ट संचय न करें।

सभी तिथियों को उनके नैसर्गिक गुणों के आधार पर विभाजित किया गया है जैसेः- **नन्दा तिथियां** (1,6,11) सभी प्रकार की शिक्षा आरंभ करने के लिए शुभ, **भद्रा तिथियां** (2,7,12), 16 संस्कारों के लिए शुभ, **जया तिथियां** (3,8,13) नई दवा शुरू करना, गृहस्थ प्रयोग के लिए नई वस्तु खरीदना, शत्रु पर आक्रमण करना और शस्त्र विद्या का आरंभ करने के लिए शुभ, **रिक्ता तिथियां** (4,9,14) ऑपरेशन करवाने के लिए शुभ और **पूर्णा तिथियां** (5,10,15) सभी प्रकार के कार्य के लिए शुभ, अमावस्या (30) पूजा-पाठ और दान आदि के लिए शुभ है।

अनेकों नवीन और शुभ कार्यों के लिए निम्न तिथियां त्याज्य हैं।

पक्षरन्ध्र या छिद्रा तिथियांः- दोनो पक्ष की 4,6,8,9,12 और 14 वीं तिथि के दिन यदि कार्य आवश्यक हो तो, 4 तिथि की प्रथम 8 घटी (192 मिनट) छोड़ दें, 6 तिथि की प्रथम 9 घटी (216 मिनट) छोड़ दें, 8 तिथि की प्रथम 14 घटी (336 मिनट) छोड़ दें, 9 तिथि की प्रथम 25 घटी (600 मिनट) छोड़ दें, 12 तिथि की प्रथम 10 घटी (240 मिनट) छोड़ दें और 14 तिथि की प्रथम 5 घटी (120 मिनट) छोड़ दें।

निम्न तिथियों में शुभ कार्य न करें।

मास शून्य तिथि	
मास	**तिथियां (दोनो पक्षों की)**
भाद्रपद	**1,2**
श्रावण	**2,3**
वैशाख	**12**
पौष	**4,5**
आश्विन	**10,11**
मार्गशीर्ष (अगहन)	**7,8**
चैत्र	**8,9**

केवल कृष्ण पक्ष की शून्य तिथियां	
मास	**तिथियां**
कार्तिक	**5**
आषाढ़	**6**
फाल्गुन	**4**
ज्येष्ठ	**14**
माघ	**5**

केवल शुक्ल पक्ष की शून्य तिथियां	
मास	**तिथियां**
कार्तिक	**14**
आषाढ़	**7**
फाल्गुन	**3**
ज्येष्ठ	**13**
माघ	**6**

नक्षत्र शून्य तिथियां (शुभ कार्य निषेध)

नक्षत्र	तिथियां (दोनो पक्षों की)
अश्लेषा	**12**
उत्तराषाढ़ा	**1**
अनुराधा	**2**
मघा	**5**
तीनों उत्तरा	**3**
स्वाती / चित्रा	**13**
हस्त/मूल	**7**

कृत्तिका	**9**
पूर्वाभाद्रपद	**8**
रोहिणी	**6, 11**

नोटः उपरोक्त तिथि नक्षत्रों के तात्कालिक योग के दिन शुभ कार्य न करें।

होलाष्टक तिथियां:- फाल्गुन शुक्ल पक्ष की अष्टमी से फाल्गुन की पूर्णिमा तक का समय होलाष्टक कहलाता है। इनमे अनेकों शुभ कार्य निषेध होते हैं।

तिथि गण्डात:- नन्दा तिथि (1,6,11) के शुरू में 1 घटी (24 मिनट) और तिथि (5,10,15) के अंत की 1 घटी (24 मिनट) छोड़कर शुभ कार्य कर सकते हैं।

पंच पर्व तिथियां:- यदि निम्न तिथियों में सूर्य संक्रांति हो तो, तिथियां शुभ कार्य के लिए त्याज्य हैं।

1 कृष्ण पक्ष की 8 तिथि
2 कृष्ण पक्ष की 14 तिथि
3 पूर्णिमा तिथि
4 अमावस्या तिथि
5 संक्रांति तिथि

यदि आवश्यक कार्य 16 संस्कार और संपत्ति से संबंधित हो तो सूर्य संक्रांति से आगे और पीछे 16 घटी (384 मिनट) को छोड़कर कार्य किया जा सकता है।

आवश्यक कार्य यदि रिक्ता तिथियों (4,9,14) और अमावस्या के दिन करना हो तो चावल दान करके कार्य किया जा सकता है।